

सूरह लैल^[1] - 92



सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अल्लाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये!
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ

- 1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!
4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।^[1]
5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,
6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,
7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।
8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,
9. और भली बात को झुठला दिया।
10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।^[2]

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَنِّيَرُهُ لِّلْيُسْرَىٰ ۝

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَنِّيَرُهُ لِّلْعُسْرَىٰ ۝

- 1 (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है कि: जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।
- 2 (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनों लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो
उसका धन उसके काम नहीं
आयेगा। وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝
12. हमारा कर्तव्य इतना ही है कि हम
सीधा मार्ग दिखा दें। إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۝
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही
हाथ में है। وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से
सावधान कर दिया है।^[1] فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝
15. जिस में केवल बड़ा हत्भाग ही जायेगा। لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْآشَقَىٰ ۝
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से)
मुँह फेर लिया। الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा
लिया जायेगा। وَسَيَجْزِيهَا الْآتِقَىٰ ۝
18. जो अपना धन दान करता है ताकि
पवित्र हो जाये। الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝
19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं
जिसे उतारा जा रहा है। وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार
की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है। إِلَّا الْبِغَاءَ وَجْهَ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝

1 (11-14) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में हैं। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।^[1]

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ

1 (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्म नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्म उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा।
आयत नं० 10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियमानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी। कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)